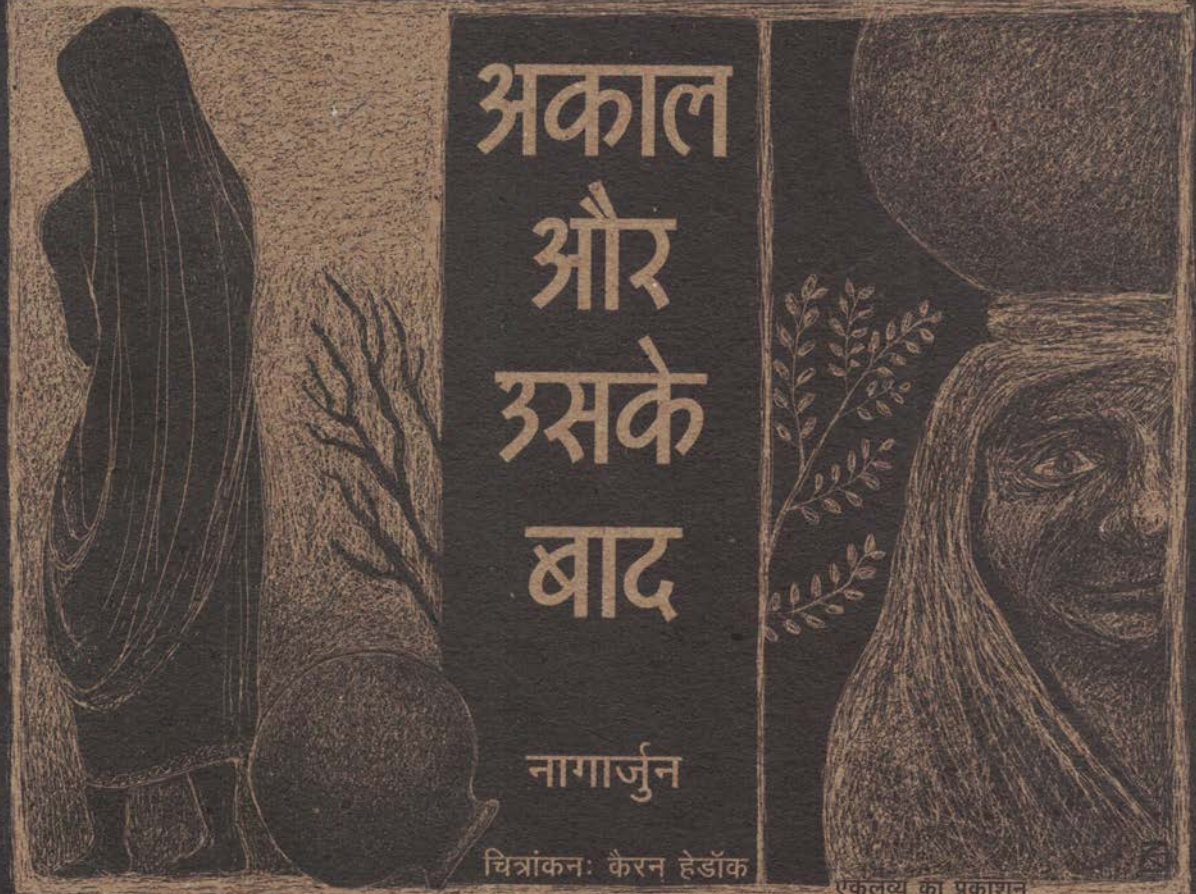
अकाल
और
उसके
बाद
नागार्जुन
चित्रांकनः कैरन हेडॉक
एकलव्य का प्रकाशन

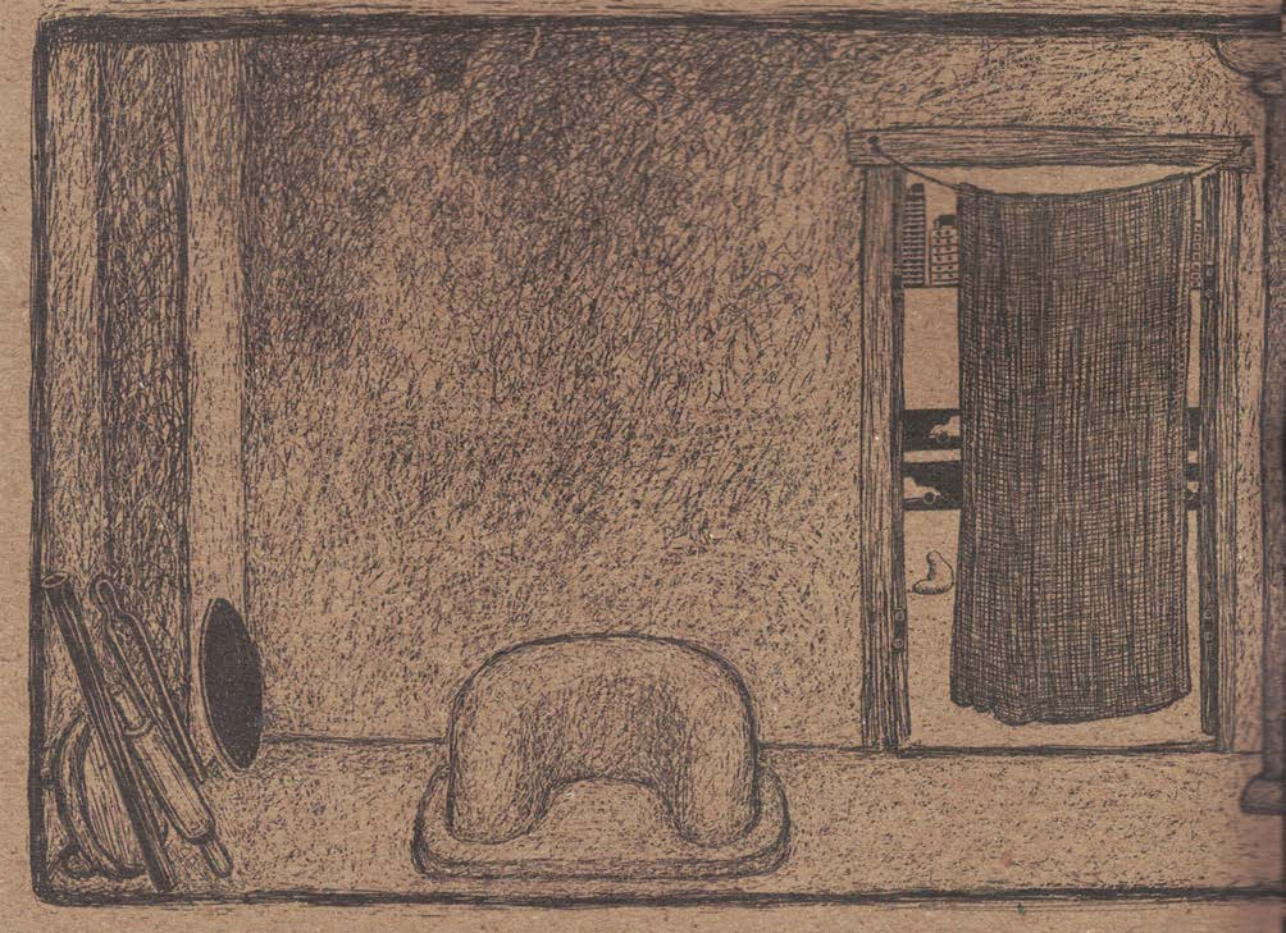

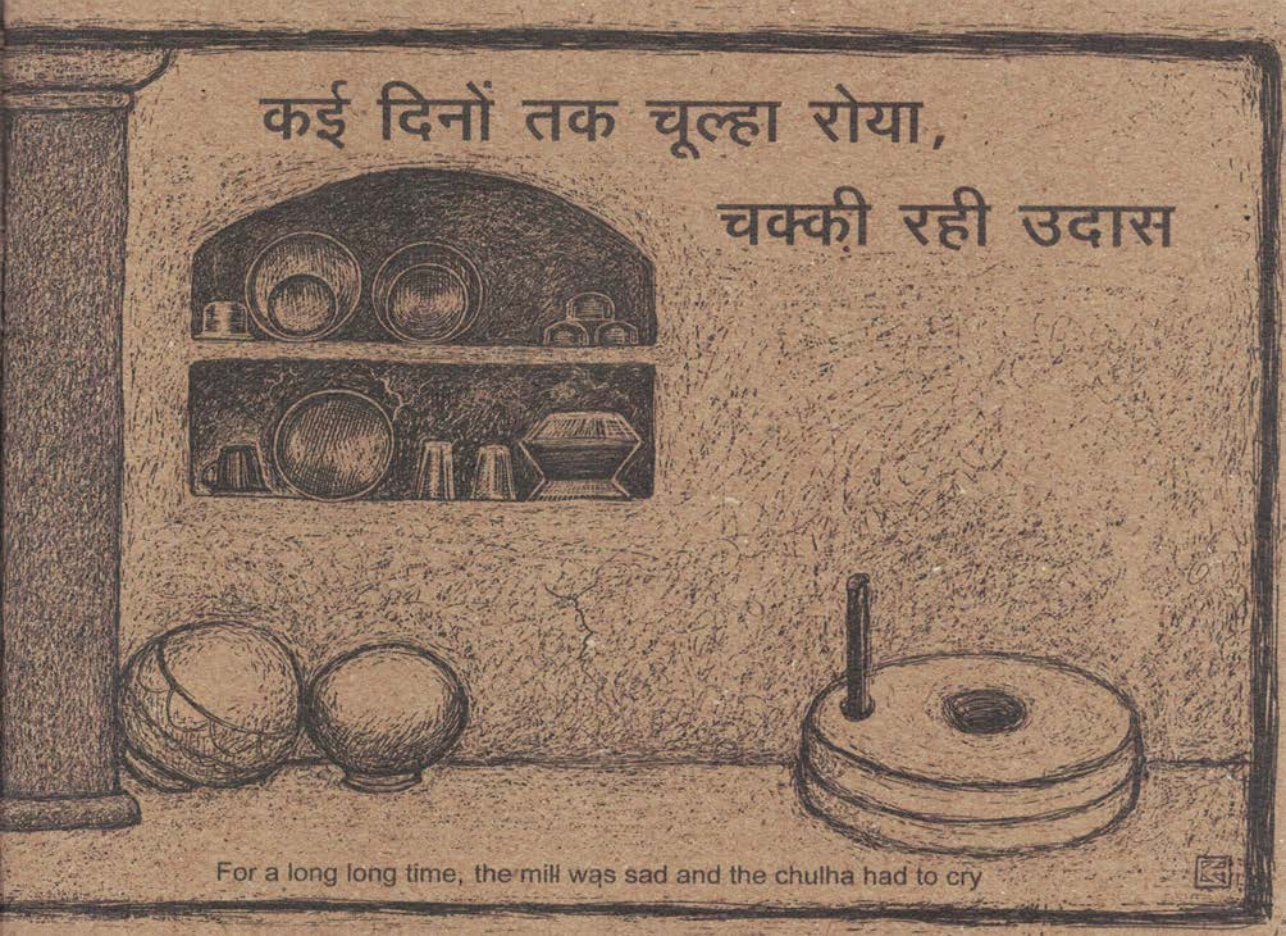

कई दिनों तक चूल्हा रोया,

चक्की रही उदास

For a long long time, the mill was sad and the chulha had to cry

कई दिनों तक
कानी कुतिया सोई उनके पास

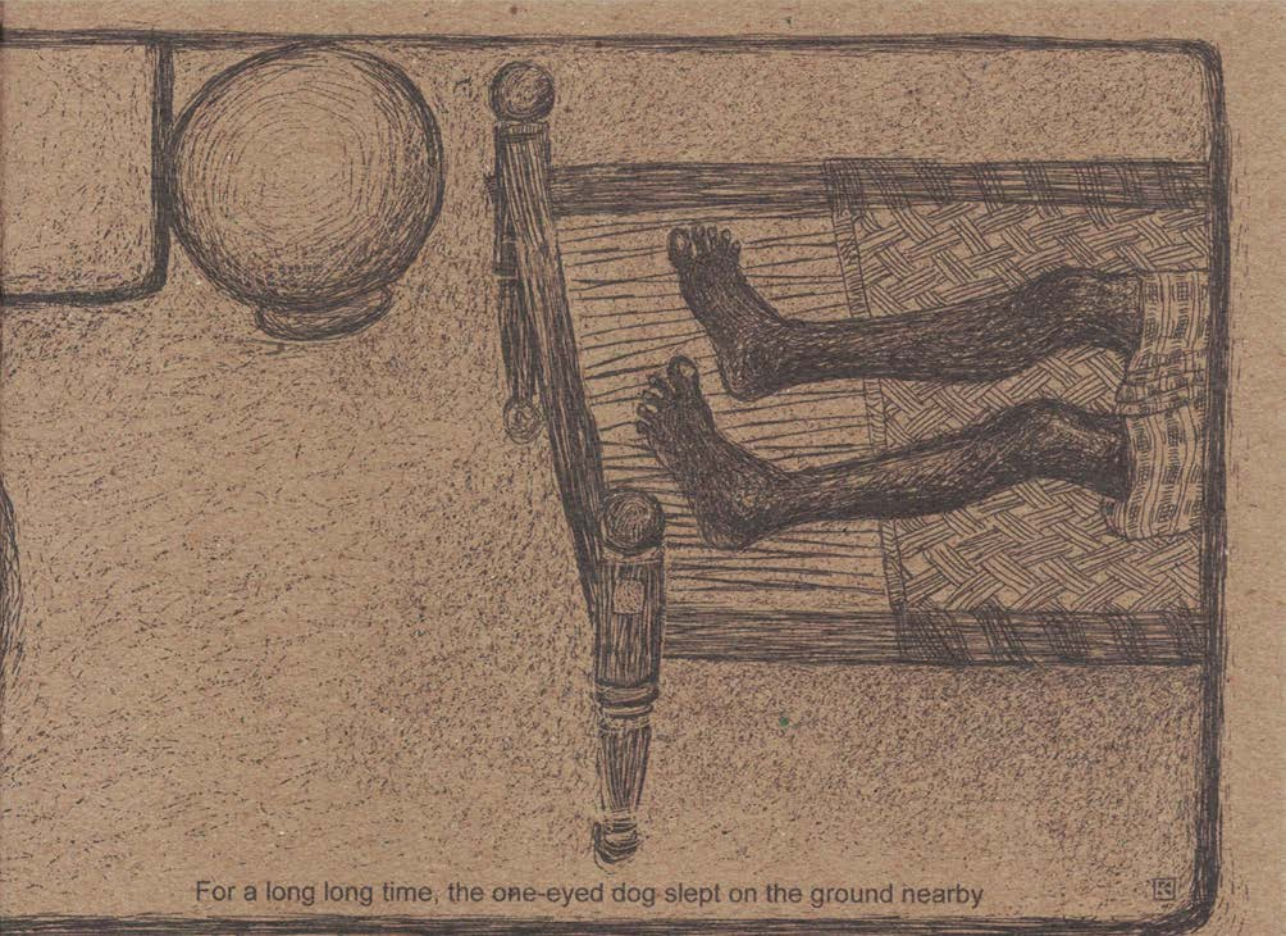

For a long long time, the one-eyed dog slept on the ground nearby

कई दिनों तक
लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

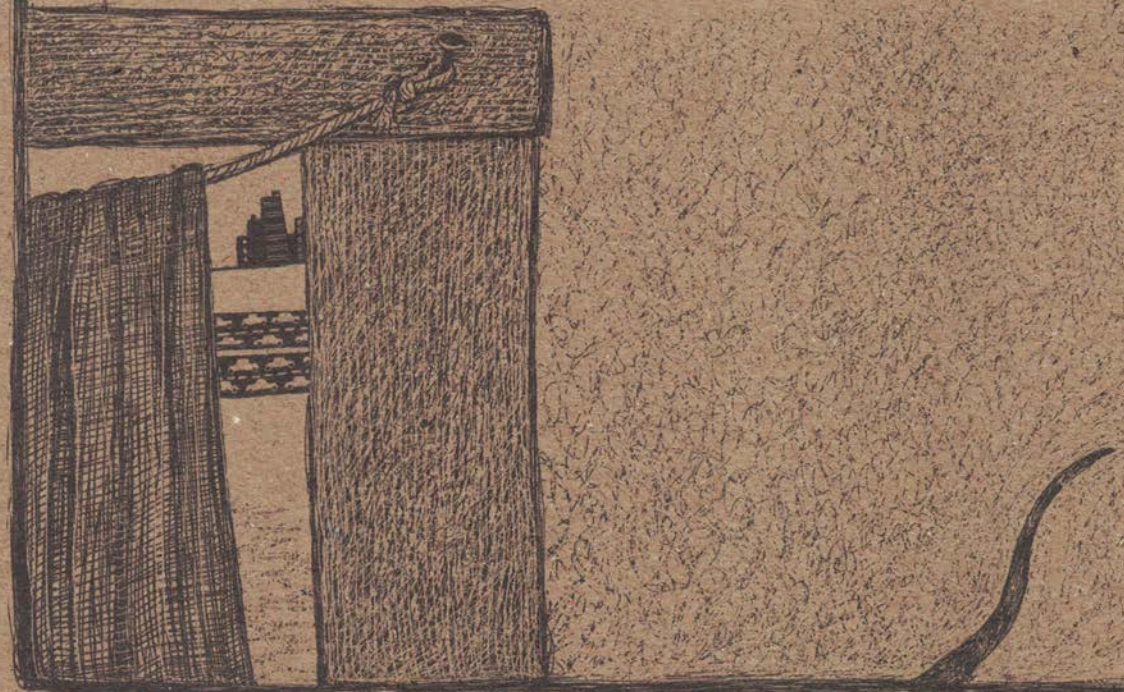

For a long long time, the lizards ran in fear across the wall

कई दिनों तक
चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

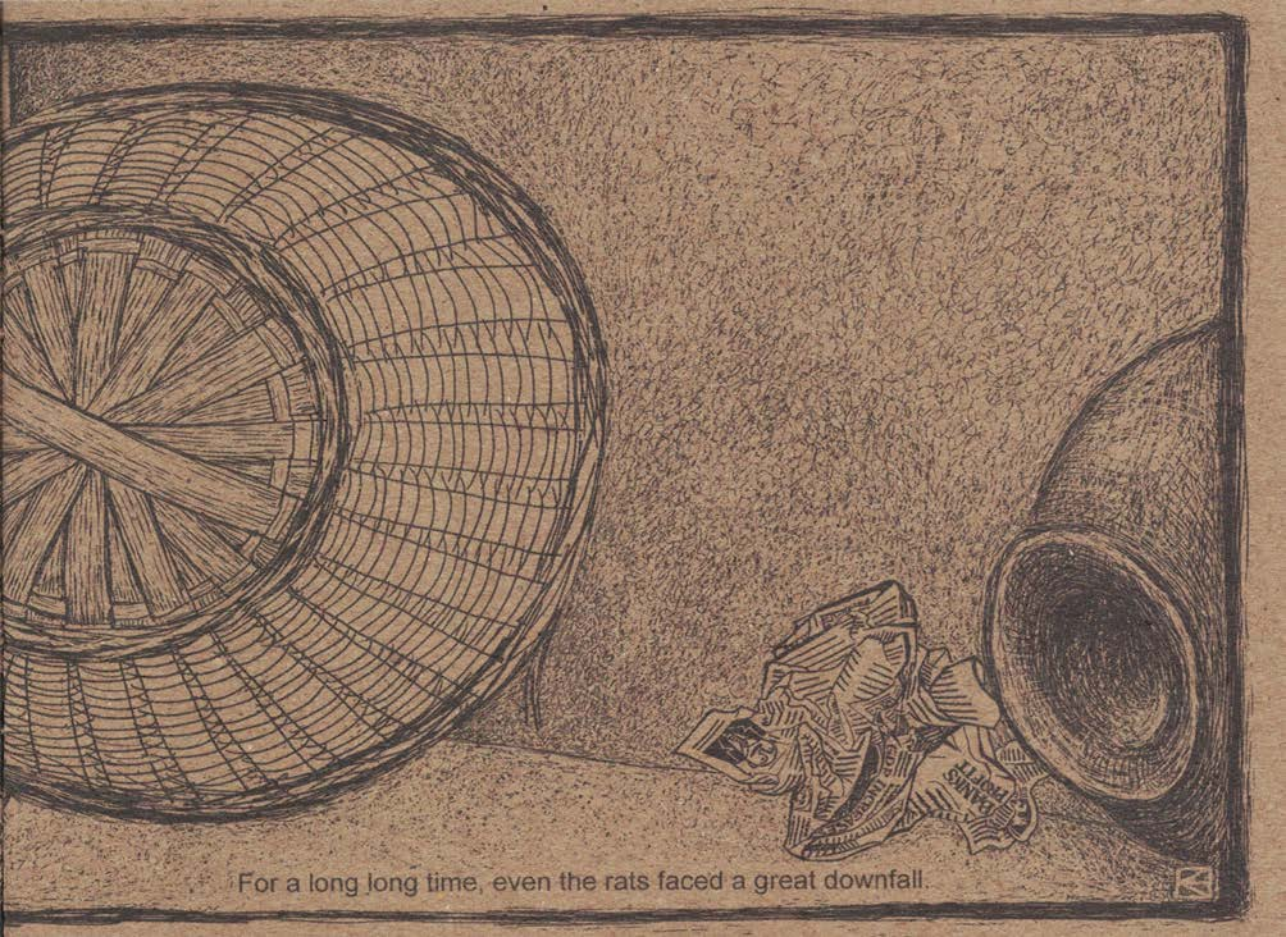

For a long long time, even the rats faced a great downfall.

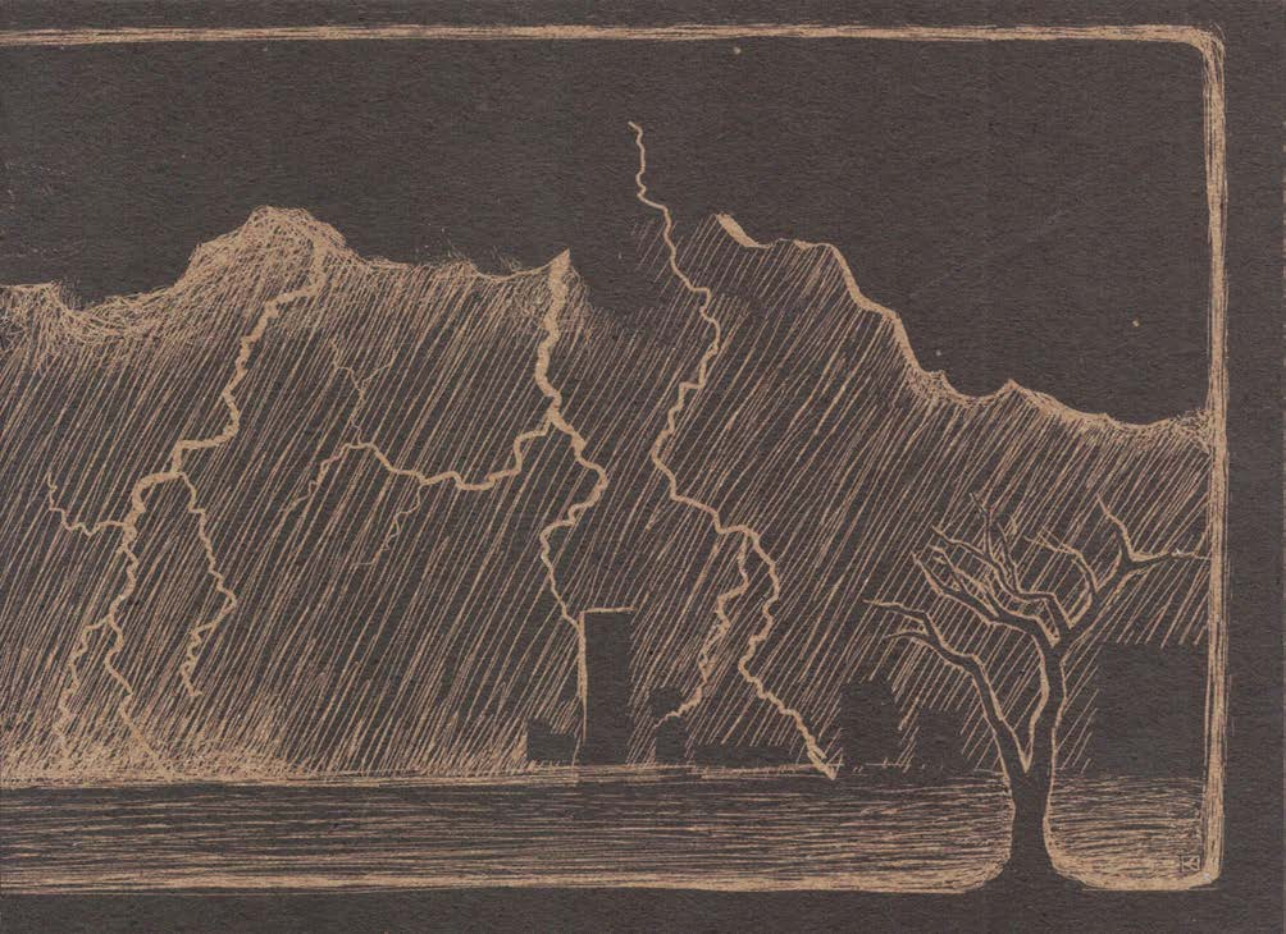

दाने आए घर के अन्दर

कई दिनों के बाद

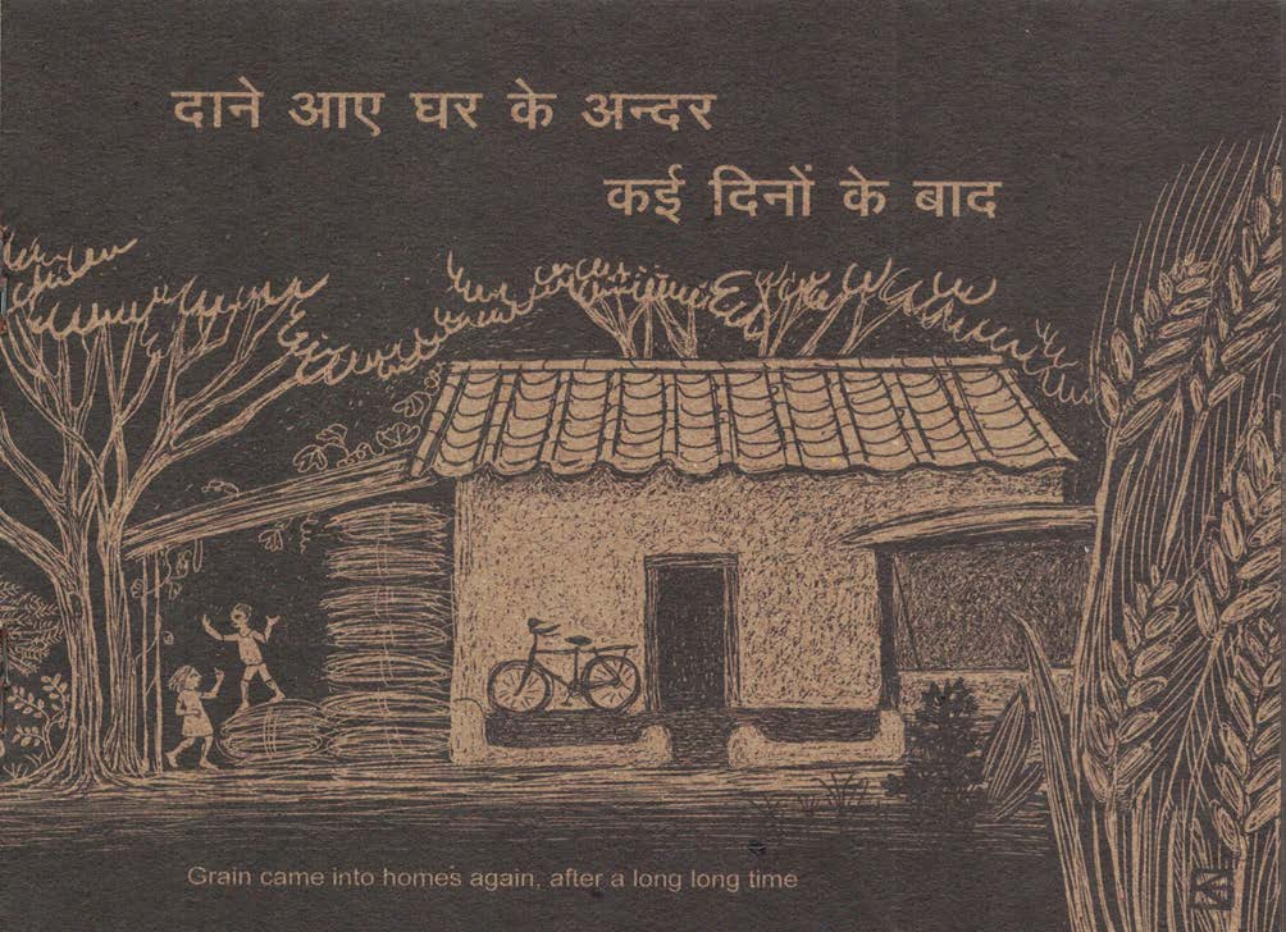

Grain came into homes again, after a long long time

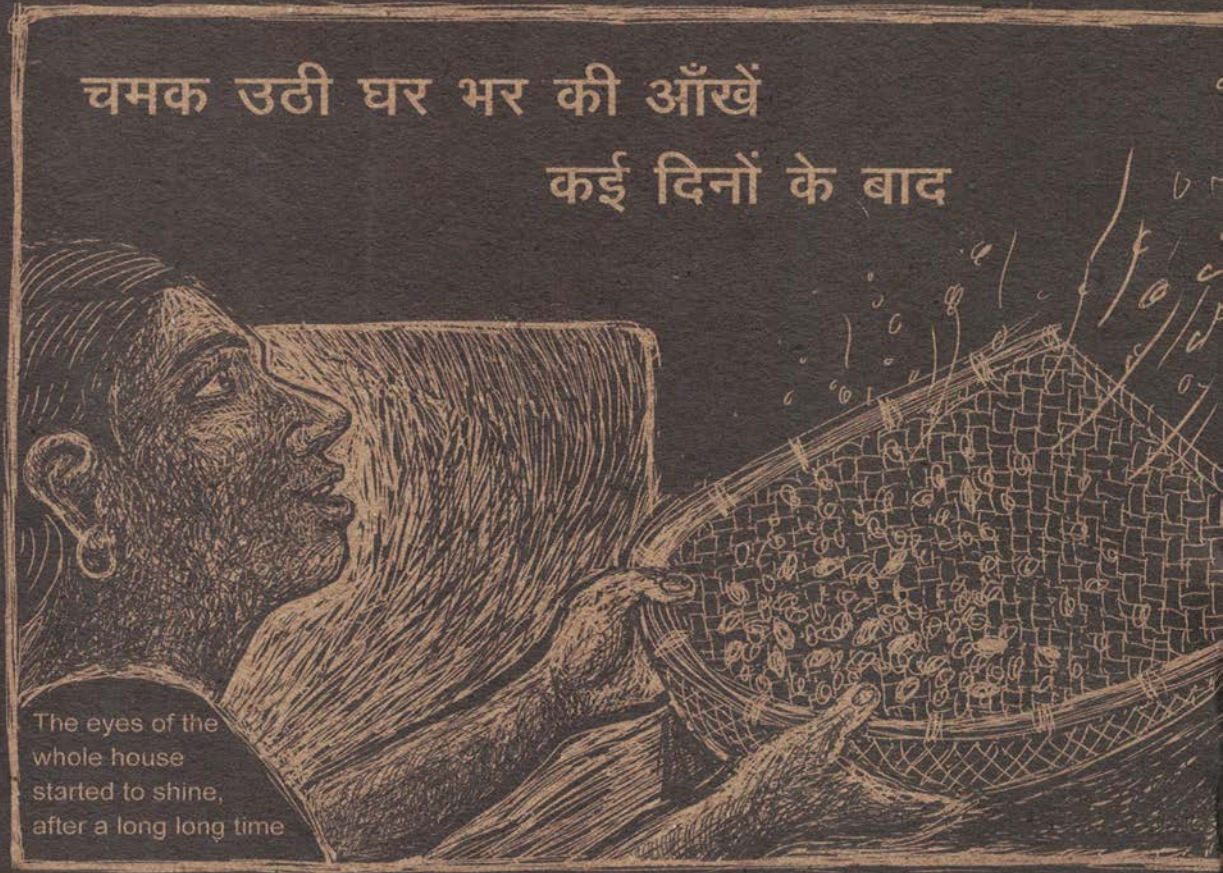

चमक उठी घर भर की आँखें
कई दिनों के बाद

The eyes of the whole house started to shine, after a long long time

धुआँ उठा आँगन से ऊपर
कई दिनों के बाद

Smoke rose up from the courtyard then, after a long long time

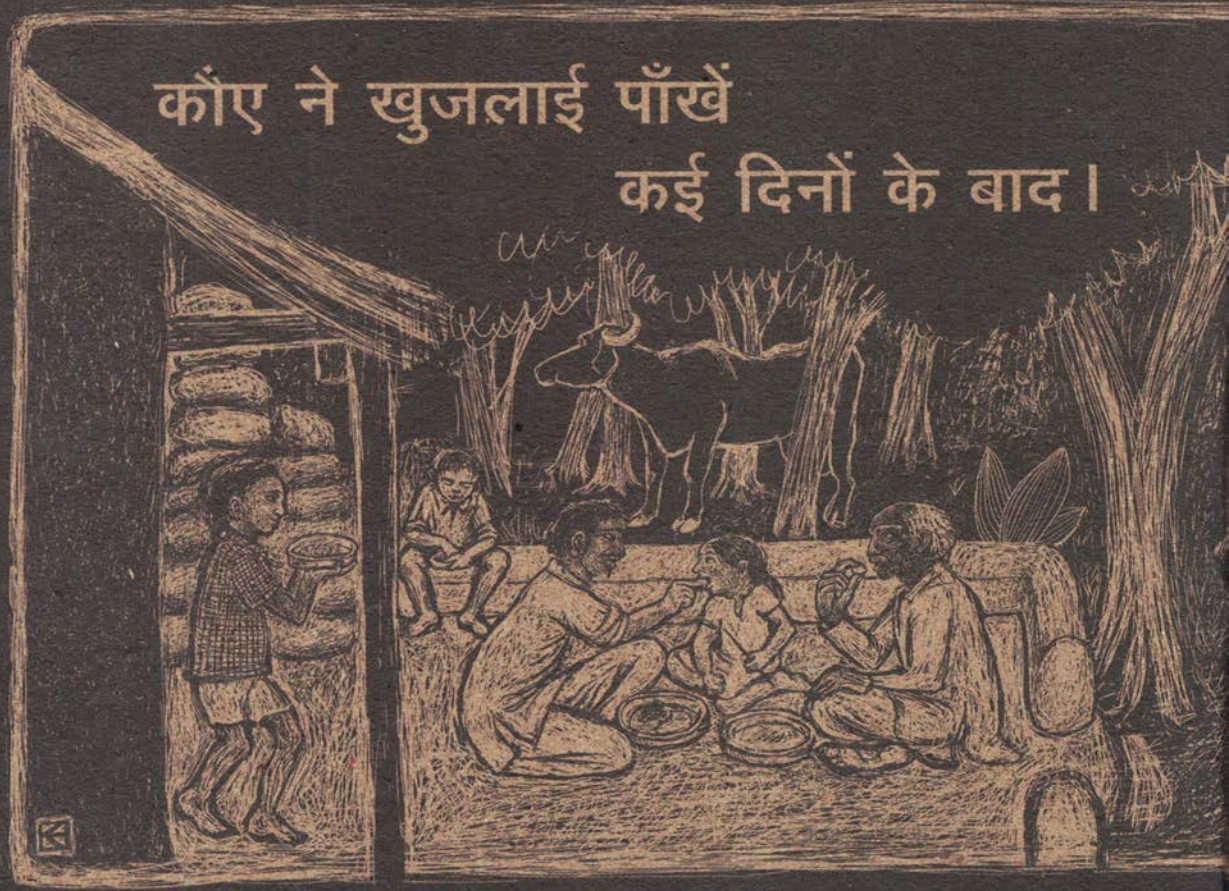
कौंए ने खुजलाई पाँखें
कई दिनों के बाद।

The crow scratched its feathers and felt so fine, after a long long time.

कई दिनों के बाद

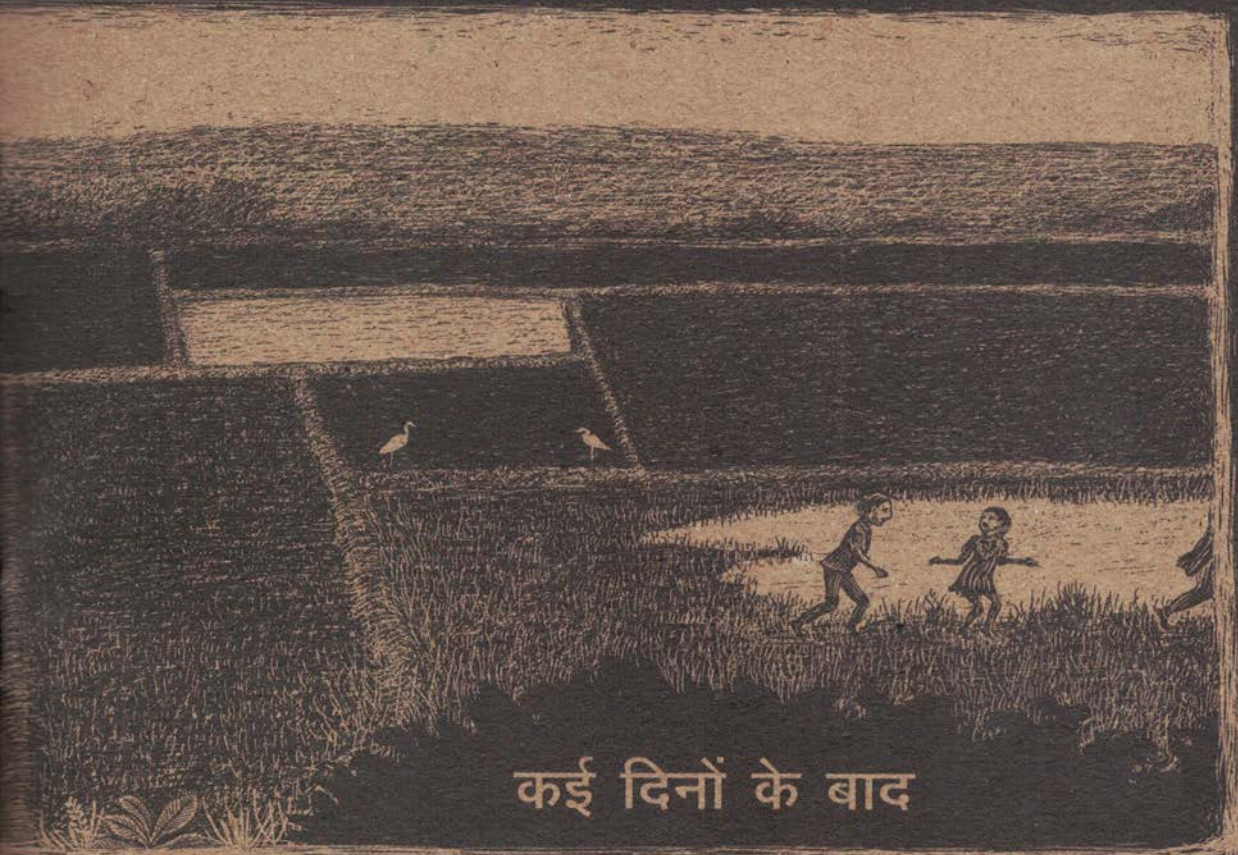
कई दिनों के बाद

अकाल और उसके बाद / AKAL AUR USKE BAAD

कविताः नागार्जुन
डिज़ाइन व चित्रः कैरन हेडॉक

कविताः शोभाकान्त मिश्र; जून 2017
इस कविता का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

चित्रः कैरन हेडॉक, जून 2017
इन चित्रों का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

जून 2017/ 2000 प्रतियाँ
कागज़ः 140 gsm ब्राउन क्राफ्ट पेपर
प्रसंग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN:978-93-85236-28-0
मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016 (मप्र) फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, प्रा लि, भोपाल (मप्र) + 91 755 268 7589

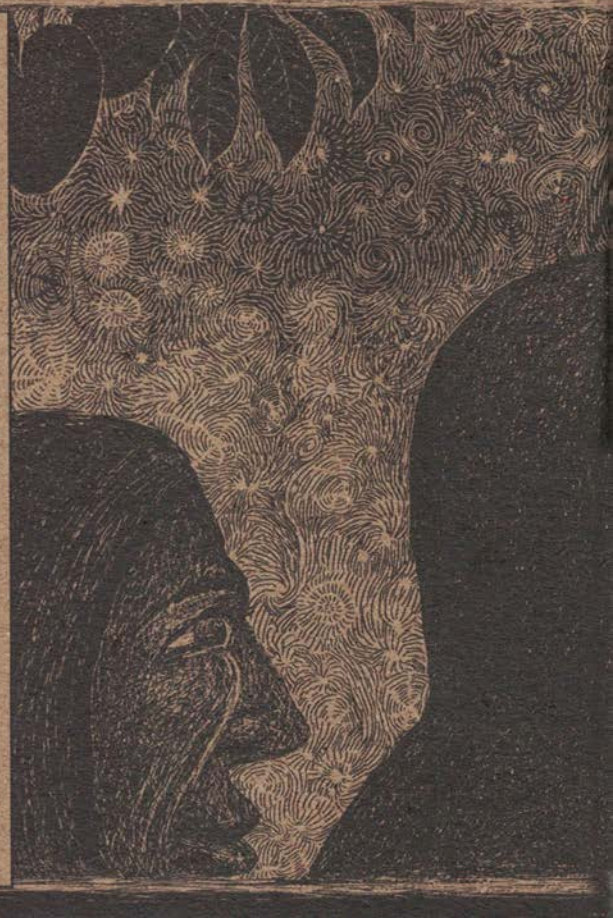

कई दिनों के बाद

नागार्जुन (11 जून 1911 - 5 नवम्बर 1998)

मधुबनी, बिहार में जन्मे जनकवि नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के वामपन्थी कवि व लेखक के रूप में ख्यात हैं। अपने लेखन, राजनीतिक-सामाजिक काम और घुमक्कड़ी में उनके सरोकार हमेशा वंचित लोगों के पक्ष में रहे हैं। 'अकाल और उसके बाद' उनकी चर्चित कविताओं में से एक है। इसे उत्तर-भारत में आम लोग खूब पसन्द करते हैं।

कैरन हेडॉक
अमरीका में बायोफिज़िक्स में पीएचडी करने के बाद 1985 से भारत में कला, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियों की किताबों व पाठ्यपुस्तकों का लेखन और चित्रांकन किया है। आप उनकी वेबसाइट को यहाँ देख सकते हैं
- www.khaydock.com

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS
एकलव्य
मूल्य: ₹ 20.00
9 789385 236280